

श्रुतायुध (श्रुत + आ^०) m. N. pr. eines Mannes MBh. 2, 121.
 श्रुतार्थ (श्रुत + अर्थ) 1) adj. der Etwas gehört hat, mit gen.: श्रुतार्थो देव गुह्यस्य भवान् so v. a. du hast das Geheimniß vernommen HARIV. 6320. — 2) f. आ N. pr. eines Frauenzimmers KATHĀS. 6, 9.
 श्रुतावती (von श्रुत) f. N. pr. einer Tochter Bharadvāja's MBh. 9, 2763. 2829.
 1. श्रुति (von 1. श्रु) f. P. 3, 3, 95, Vārt. 1 (कर्णो). Vop. 26, 183. 4) das Hören, Vernehmen, Zuhören H. an. 2, 203. MED. I. 65. CAT. Br. 14, 6, 5, 1. 7, 1, 27. 2, 20. वेदस्य VS. PRĀT. 8, 41. fg. समये Spr. (II) 5046. धर्म^० 3369. इष्टानिष्टदर्शनश्रुतिभिः SĀH. D. 175. BHĀG. P. 5, 18, 11 (pl.). यन्नामश्रुतिमात्रेण 9, 5, 16. श्रुतिमभिनीय *thuend, als wenn er etwas hörte*, ÇĀK. 31, 8. अश्रुतिमभिनीय UTTARAR. 54, 4 (69, 11). ब्रूहि यद्यस्ति ते श्रुतिः *sprich, wenn du es gehört hast*, MBh. 13, 823. श्रुतिं वचोऽनुगो (so zu lesen) कवा so v. a. auf die Rede hinhorchend WEBER, PRATIGŪS. 111. — 2) Ohr (Gehör) AK. 2, 6, 2, 45. 3, 4, 1, 76. TRIK. 3, 3, 188. H. 573. H. an. MED. HALĀJ. 2, 361. VIKR. 56. VARĀH. BRH. S. 51, 39. KATHĀS. 18, 82. du. SARVADARÇANAS. 176, 17. °विषयगुणा ÇĀK. 1. °गोचरा WEBER, RĀMAT. Up. 336. तेन शब्देन मक्ता पूर्णाश्रुतिः MBh. 1, 5360. यदि ते श्रुतिमागतः zu Ohren gekommen R. 3, 18, 6. श्रुतिं गतम् 66, 8. श्रुतिं चकाराद्युत्सक्तयोदये BHĀG. P. 9, 4, 18. पतञ्जलैः श्रुतिं व्रतः RĀGĀ-TAR. 3, 400. श्रुतिं किन्दन् 5, 346. सर्वश्रुतिमनोहर R. 1, 3, 7. श्रुतश्रुतिसुखावह 4, 5. °कारिन् R. 2, 13. MĀRK. P. 61, 24. °मुखद VARĀH. BRH. S. 104, 64. °मुख adj. BHĀG. P. 7, 9, 25. °दूषक LA. (III) 89, 20. °कटु KĀVJĀ. im ÇKDr. — 3) Hypotenuse, Diagonale (wie alle Wörter für Ohr) COLEBR. Alg. 59. GOLĀDBJ. TRIPRAÇN. 42. fgg. — 4) Laut, Klang, Geräusch RV. 8, 83, 3. AV. 14, 7, 20. KHĀND. Up. 3, 13, 8. RV. PRĀT. 3, 3, 6, 5. 9. 13, 4. 16. AV. PRĀT. 3, 71. TS. PRĀT. 21, 10. 15. Comm. प्रोच्यमानश्रुतिभिः BHĀG. P. 5, 2, 4. गीत^० KATHĀS. 12, 32. समान^० adj. gleichlautend P. 4, 3, 106. Schol. — 5) in der Musik ein Viertelton oder Intervall (deren 22 angenommen werden) H. an. AS. Res. 3, 69. 9, 461 (nach HAUGHTON). Verz. d. Oxf. H. 200, b, 5. 6. 10. °ज्ञातिविशारद JĀGĒ. 3, 115. Çiç. 4, 10. 11. 1. PĀNĀR. 3, 12, 9. PĀNĀT. ed. Bomb. IV. V. Notes, S. 14. — 6) Lautcomplex (ohne Rücksicht darauf, ob es ein Wort für sich oder nur einen Bestandtheil desselben bildet) TS. PRĀT. 4, 35 (wir lesen यतीश्रुतिः). 12, 7. 13, 12. — 7) Kunde, Nachricht, Gerücht, Sage; = वार्ता TRIK. H. an. MED. आगता R. 3, 63, 25. श्रुतौ तस्करता स्थिता so v. a. kennt man nur von Hörensagen RAGH. 1, 27. इत्वाकुवंशमदशं व्याकृतं भरतं तया । अनुव्रयं गुणानां च श्रुतेश्च यशसश्च ते R. GORR. 2, 93, 2. सोता^० Nachrichten von 4, 61, 31. रामस्याभ्युदयश्रुतिः RAGH. 12, 3. अमीष्टवर^० KATHĀS. 16, 67. इति श्रुतिः so lautet die Sage MBh. 1, 3552. द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवुरिति श्रुतिः R. 2, 110, 18. RĀGĀ-TAR. 6, 112. 306. pl.: इतिहासाः सवैयाख्या विविधाः श्रुतयो ऽपि च MBh. 1, 50. एष मे कृत्त संदेशः श्रुतिभिः (= वेदैः NILAK.) ख्यातिमेव्यति । देवतानां दिविष्ठानां जगत्तश्च so v. a. durch Weitererzählen HARIV. 4345. — 8) Ausspruch; इतीयं प्रथिता श्रुतिः MBh. 1, 7067. 8344 (इति zu ergänzen), पौर्विकी 14, 524. श्रुतिर्हि श्रूयते पुण्या ब्राह्मणानां यशास्वनाम् R. 2, 29, 17. अतकाले हि भूतानि मुह्यन्तीति पुरा श्रुतिः । रात्रिं कुर्वता लोके प्रत्यक्षा सा श्रुतिः कता 106, 12 (113, 7 GORR.). 107, 11. लौकिकी Spr. 3039. लोके हि प्रथिता ननु श्रुतिरियं नार्यो ऽपि गायन्ति याम् (II)

4161. इति सत्यवती श्रुतिः BHĀG. P. 4, 21, 43. 10, 74, 31. insbes. ein überlieferter Ausspruch in heiligen Dingen, eine religiöse Vorschrift, ein heiliger Text; = वेद, आत्माय AK. 1, 1, 5, 3. 2, 7, 40. 3, 4, 1, 76. H. 249. H. an. MED. HALĀJ. 1, 9, 5, 10. श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु स्मृतिः M. 2, 10, 9. श्रुतिः संकितास्वरूपा ब्राह्मणास्वरूपा च स्मृतिर्धर्मस्मारका मन्वादिः Comm. zu ÇĀNKH. GRUJ. 2, 7. श्रुतिश्च द्विविधा वैदिको तात्त्विको च KULL. zu M. 2, 1. Ait. Br. 7, 9. Nir. 13, 13. ANUPADA 2, 10 in Ind. St. 1, 44. WEBER, GJOT. 111. श्रुत्युक्त im Gegens. zu स्मार्त M. 1, 108. धर्म विज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः 2, 13. °स्मृत्युदित 4, 155. 9, 96. 12, 109. BHĀG. 2, 53. इमां श्रुतिमुदाहरेत् MBh. 13, 3670. SĀNKHJAK. 5 (nach dem Comm. wohl आप्तश्रुती zu lesen). Verz. d. Oxf. H. 65, a, 9. 10. 276, b, 1. RAGH. 2, 2. °मुखरमुखानां पण्डितानाम् Spr. (II) 8904. व्यसनं श्रुतौ 6147. VARĀH. BRH. S. 43, 59. BRH. 1, 1. निर्दोष^० SARVADARÇANAS. 45, 20. 48, 20. 49, 4. 103, 6. LA. (III) 90, 22. अखिलश्रुतिस्मारा BHĀG. P. 1, 2, 3. 3, 9, 5. परमार्थं च श्रुतेर्न ज्ञानाति PĀNĀT. 167, 1. °गणाः BHĀG. P. 8, 24, 61. °गणाः 14, 4. °व्रणमन्त्राः MAHIDH. zu VS. 24, 1. °सामर्थ्यात् KĀTJ. Çr. 1, 6, 26. श्रुत्यानर्थक्यम् 8, 5. श्रुत्यर्थाभावान् 10, 1. °प्रामाण्यतम् M. 2, 8. °चोदनात् 35. 169. °निर्दर्शनात् 11, 45. °द्वेध 2, 14. 9, 32. वैदिकी 2, 15. 7, 97. सनातनी 3, 284. साधो LA. (III) 87, 6. सावती BHĀG. P. 1, 4, 7. °विक्रायक MBh. 5, 1404. इति श्रुतेः weil es so in der Schrift heisst LĀTJ. 4, 10, 7. KĀTJ. Çr. 1, 3, 10 (उपाश्रुप्रयोगः श्रुतेः). 3, 8, 31. VEDĀNTAS. (Allah.) No. 8. SARVADARÇANAS. 55, 1. 3. दीक्षितस्याधिक्रमप्रतिषेधश्रुतेः weil vorgeschrieben ist, — gelehrt wird KĀTJ. Çr. 7, 1, 34. तूष्णीं^० 4, 10, 4. बह्वृ^० LĀTJ. 4, 10, 18. सर्वकर्मफलपसंकार^० ÇĀNKH. zu BRH. AR. Up. S. 15. तत्र प्राप्तविवेकस्यानावृत्तिश्रुतिः KAP. 1, 84. pl.: तथा च श्रुतयो बह्व्यो निगीता निगमेष्वपि M. 9, 19. अद्वा श्रुतिषु संदधे LA. (III) 91, 3. विविधास्त्वं श्रुतीर्वेत्य वेदाङ्गानि च सर्वशः MBh. 1, 4150. विविधाश्चैपनिषदीः श्रुतीः M. 6, 29. अथर्वाङ्गिरसोः 11, 38. श्रुतयो विभिन्नाः Spr. (II) 2503. इत्येवमादिश्रुतिभ्यः ÇĀNKH. zu BRH. AR. Up. S. 147. SARVADARÇANAS. 57, 2. 58, 9. 65, 18. 72, 5. श्रुतयः so v. a. वेदाङ्गानि कर्माणि (nach dem Comm.) BHĀG. P. 5, 2, 21. der heilige Text personifiziert HARIV. 14036. — 9) Benennung, Titel: विध्वत्पनन्यविषयो लोकपाल इति श्रुतिम् KĀVJĀ. 2, 331. — 10) Gelehrsamkeit (wohl nur fehlerhaft für श्रुतः): °महन्त् (v. l. श्रुत^०) ÇĀK. 194. °कुलज्ञातिख्याताः (v. l. श्रुत^०) VARĀH. BRH. S. 32, 18. — 11) angeblich Synonym von बुद्धि TATTVAS. 8. — 12) das Nakshatra Çravanā ÇANDAR. im ÇKDr. — 13) N. pr. einer Tochter Atri's und Gattin Kardama's VP. 83, N. 4. — Vgl. श्रु (अश्रुतोपथं या in Vergessenheit gerathen MBh. 12, 321), चनुः^०, जन^०, बह्वृ^०, मन्त्र^०, मन्त्रा^०, यथा^०, लोक^०, वेद^० (in der 2ten Bed. auch MBh. 1, 6158. 3, 1760. 12, 12969. °श्रुती 2, 1574), श्रूय^०, श्रौत.

2. श्रुति (wie eben) m. N. pr. eines Fürsten MBh. 1, 232. könnte auch श्रु^० oder श्रा^० heissen.

3. श्रुति (von 2. श्रु) f. Lauf, Bahn: डुरो न वानं श्रुत्या श्रयो वधि RV. 2, 2, 7. इन्द्रः किल् श्रुत्या श्रस्य (सूर्यस्य) वेद 10, 111, 3. als v. l. neben सुति z. B. Ait. Br. 1, 2.

4. श्रुति HIOURN-THSANG 1, 60 fehlerhaft für श्रुति.

श्रुतिकट m. 1) = प्राक्षिप्त, पापशोधन Sūhne. — 2) Schlange TRIK. 3, 3, 104. MED. I. 66. HĀR. 227. — 3) = प्राक्षिप्त^० (?) MED. — Vgl. श्रुतिकण्ठ.